जनजाति की परिभाषा

जनजाति क्या है? किसी मानव समूह को एक जनजाति मानने के लिए यथार्थ रूप में कौन-सी कसौटियाँ हैं? जनजातीय जीवन की क्या विलक्षणता है?

यह रोचक किन्तु दुःखद है कि मानवशास्त्री, समाजशास्त्री, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासक तथा ऐसे ही अन्य लोग जो जनजातियों तथा उनकी समस्याओं से सैद्धान्तिक स्तर अथवा व्यावहारिक आधार पर जुड़े रहें हैं, विषयवस्तु की अपनी अवधारणा एवं परिभाषा के विषय में एकमत नहीं हैं। आर्थर विल्के (1979) समस्या को उचित परिप्रेक्ष्य में यह कहकर प्रस्तुत करते हैं कि वर्षों तक भारत में जनजातीय लोगों के आधिकारिक आलेख व चित्रण को संदिग्धता ने जकड़ रखा था। उदाहरणार्थ सन् 1917 से 1931 की जनगणना तक जनजातियों के नामकरण के सन्दर्भों में उत्तरोत्तर संशोधन होते रहे, जैसे आदिवासी अथवा "दलित वर्ग।" सन् 1941 की जनगणना तक इन विशिष्ट विशेषणों को त्याग दिया गया। स्वतंत्रता के पश्चात् "अनुसूचित जनजातियों" तथा "आदिवासी" (जैसा उन्हें सामान्यतः पुकारा जाता है) का अभिप्राय ग्रहण करने की प्रथा चलती रही। इस प्रकार का प्रमाणीकरण भी संदिग्धता को पूर्णतया समाप्त नहीं कर पाया।

निस्सन्देह समय बीतने के साथ "जनजाति" की अवधारणा तथा परिभाषा संबंधी मतभेद कुछ हद तक निश्चित रूप से कम हो गये, किन्तु इस समस्या को उचित परिप्रेक्ष्य में समझने के लिये सैद्धान्तिक विचार-विमर्श आवश्यक है।

वर्तमान अध्याय में विचार-विमर्श के आधारस्वरूप यहाँ जनजाति की कुछ परिभाषायें दी जा रही हैं :–

'जनजाति' समान नाम धारण करने वाले परिवारों का एक संकलन है, जो समान बोली बोलते हों, एक ही भूखण्ड पर अधिकार करने का दावा करते हों अथवा दखल रखते हों जो साधारणतया अन्तर्विवाही न हों यद्यपि मूल रूप में चाहे वैसे रह रहे हों।

–इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया

'जनजाति' विकास के आदिम अथवा बर्बर आचरण में लोगों का एक समूह है जो एक मुखिया की सत्ता स्वीकारते हों तथा साधारणतया अपना एक समान पूर्वज मानते हों।

—आक्सफोर्ड शब्दकोष

सरलतम रूप में 'जनजाति' ऐसी टोलियों का एक समूह है जिसका एक सान्निध्य वाले भूखण्ड अथवा भूखण्डों पर अधिकार हो और जो एकता की भावना, संस्कृति में गहन समानता, निरन्तर सम्पर्क तथा कतिपय सामुदायिक हितों में समानता से उत्पन्न हुई हो।

—राल्फ लिंटन

'जनजाति' समान संस्कृति वाली जनसंख्या का एक स्वतन्त्र राजनीतिक विभाजन है।

—लूसी मेयर

'जनजाति' समान नाम के अंतर्गत एकत्रित एक जनसमूह है जिसमें कि समूह के सदस्य इस बात पर गर्व महसूस करते हैं कि वे समान भाषी, समान भूखण्ड स्वामी हैं तथा जो लोग उनके नाम के अंशधर नहीं हैं वे बाहरी ही नहीं बल्कि शत्रु हैं।

—जी. डब्ल्यू.बी. हाण्टिगफोर्ड

'जनजाति' क्षेत्रीय संबंध युक्त तथा अंतःविवाही सामाजिक समूह है जिसके कार्यों में कोई विशेषज्ञता नहीं होती, जो जनजातीय अधिकारियों द्वारा शासित, वंशानुक्रम अथवा अन्य बोली से जुड़े हुये, अन्य जनजातियों अथवा जातियों से सामाजिक दूरी को मान्यता देने वाले, अपने प्रति किसी प्रकार की सामाजिक असमानताओं को नहीं जोड़ते (जैसा कि जाति संरचना में होता है), जो जनजातीय परंपराओं में विश्वास रखते हैं तथा प्रथाओं का पालन करते हैं, विदेशी स्रोतों के विचारों के प्राकृतिकीकरण में अनुदारता तथा सबसे अधिक सजातीयता और क्षेत्रीय अखण्डता में विश्वास करते हैं।

—डी. एन. मजूमदार

आदर्श रूप में, जनजातीय समाज आकार में छोटे, अपने सामाजिक, विधिक तथा राजनीतिक संबंधों की स्थानिक एवं कालिक परास (टेम्पोरल रेन्ज) में प्रतिबन्धित होते हैं तथा नैतिकता, धर्म तथा तदनुरूप आयामों की विश्व-दृष्टि रखते हैं। अभिलाक्षणिकता की दृष्टि से भी जनजातीय भाषायें अलिखित होती हैं, अस्तु संचार की सीमा, काल और दोनों ही दृष्टियों से अवश्यम्भावी रूप से संकीर्ण हैं। इसके बावजूद जनजातीय समाज आलेखों में मितव्ययिता प्रदर्शित करते हैं तथा अपने में एक ऐसी अभिसंकुचन एवं आत्मनिर्भरता रखते हैं जिसका आधुनिक समाज में अभाव है।

—एल. एम. लेविस